बच्चों को अच्छी शिक्षा देकर एवं अगर सम्भव हो तो गरीब बच्चों को पेंसिल,कटर,रबर, इत्यादि देकर भगवान न सही मगर भगवान के दोस्त अवश्य बन जाओ । भगवान ने आपको इस धरती पर शिक्षक बना के भेजा है। बच्चों के जीवन में खुशियों का रंग भरकर भगवान को उपकृत करें। जीवन की यही सार्थकता है।

सम्पादक की कलम से

डाइट शाहपुर बेगुसराय की शैक्षिक पत्रिका सृष्टी प्रकाशन करते हुए मुझे अपार ख़ुशी हो रही है । आशा ही नहीं पूर्ण विशवास है कि यह पत्रिका शिक्षकों एवं विद्यार्थियो की दशा एवं दिशा सुधारने में कारगर सिद्ध होगा ।

अध्यापक आज अपने मार्ग से भटक गये हैं । वे अपने मूल कार्य पर ध्यान न देकर अन्य गैर शैक्षणिक कार्यो में ज्यादा दिलचस्पी लेते हैं । ये सच है कि विद्यालय में ढेर सारे गैर शैक्षणिक कार्य होते हैं जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को प्रभावित करते हैं बावजूद इसके शिक्षक अगर ठान लें कि चाहे कितना भी विपरीत परिस्थिति क्यों न हो मैं एक शिक्षक हूँ और शिक्षण कार्य मेरा प्रथम दायित्व है, प्रथम कर्तव्य है, मैं पहले बच्चों को पढ़ाऊँगा तब ही कोई अन्य कार्य करूँगा तो कोई भी विपरीत परिस्थिति उनके इस पुनीत कार्य में आड़े नहीं आयेगा और निशिचत रूप से बच्चों में शैक्षिक सुधार होगा, पढाई के प्रति अभिरुचि उनमें पैदा होगी एवं विद्यालय का वातावरण आनंददायी होगा ।

`प्रथम' संस्था की असर रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2006 में 5वीं वर्ग के 46 प्रतिशत बच्चे 2री कक्षा के भाषा की किताब नहीं पढ़ पाते थे । वर्ष 2011 में 5वीं कक्षा के लगभग 50 प्रतिशत बच्चे ऐसे पाये गये जो 2री कक्षा के भाषा की किताब नहीं पढ़ पाते थे और आज 5वीं कक्षा के लगभग 55 प्रतिशत बच्चे ऐसे हैं जो 2रीं कक्षा की भाषा की किताब नहीं पढ़ पाते हैं । यही हाल लगभग गणित का भी है । चौथी पांचवीं वर्ग के लगभग 45 प्रतिशत बच्चे आज भी ऐसे हैं जो सामान्य भाग नहीं दे पा रहे हैं यानी 2री कक्षा का भी ज्ञान नहीं रखते हैं । इस प्रकार हम देखते हैं की यह एक भयावह स्थिति हैं । हम गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की बात करते हैं जबकि साल-दर-साल इसमें गिरावट देखने को मिल रहा हैं । आखिर इसके लिए कौन जिम्मेदार है ? निशचित रूप से हमारा शिक्षक समाज । क्योंकि शिक्षकों का ही काम शिक्षा देना है । शिक्षक जब चाहते हैं धरना, प्रदर्शन इत्यादि करके सरकार से अपनी बात मनवा लेते हैं । शिक्षकों का भी फ़र्ज़ बनता है की वे बच्चों को अच्छी शिक्षा दें

जिससे उनकी बौधिक क्षमता का विकास हो सके । खेतों की सिंचाई करते हैं तो फसल लहलहा उठती है अगर हम सिचाई न करे और यूँ ही छोड़ दे तो उसमे खर-पतवार एवं जंगल उग आयेंगे। इसी प्रकार अगर बच्चों को विद्यालय में यूँ राम भरोसे छोड़ दिया जाय तो उनके मस्तिष्क में कचरा भर जायेगा । अगर उन्हें हम विद्यालय में सही शिक्षा देंगे तो निशचित रूप से उनमे बौधिक विकाश होगा ।

विशव बैंक की सर्वे रिपोर्ट आया है की लगभग 25 प्रतिशत शिक्षक विद्यालय से गायब रहते हैं और अपना वेतन उठाते हैं । ऐसे शिक्षक बच्चों के जीवन से खिलवाड़ करते हैं और शिक्षकीय वृति को बदनाम करते हैं । सच्चा शिक्षक वही है जो खुद खुश रहे और दूसरों के जीवन में खुशियां बांटे ।

एक कहानी याद आ रही है । एक बच्चा काफी ठंड में नंगे पैर गुलदस्ते बेच रहा था । लोग उसमें भी मोलभाव कर रहे थे । एक सज्जन को कड़ाके की ठंड में उसके नंगे पैर को देखकर बहुत दुख । उसने बाज़ार से एक नया जूता ख़रीदा और उस बच्चे को देते हुए कहा – बेटा लो, ये जूता पहन लो । लड़का खुश होकर जूता लेकर पहन लिया और उस सज्जन का हाथ थामकर पूछा, " क्या आप भगवान हैं ?" उसने घबड़ाकर हाथ छुड़ाया और कानों को हाथ लगाकर कहा, "नहीं बेटा, नही, में भगवान नहीं ।" लड़का फिर मुस्कुराया और कहा, "तो फिर जरूर आप भगवान के दोस्त होंगे क्योंकि मैंने कल रात भगवान से कहा था कि मुझे नये जूते दे दें ।" वो सज्जन मुस्कुरा दिया और उसके माथे को प्यार से चूमकर अपने घर की तरफ चल दिया । अब वो सज्जन जान चुके थे की भगवान का दोस्त होना कोई मुश्किल काम नहीं ।

अतः हे शिक्षकों ! आप भी बच्चों को अच्छी शिक्षा देकर एवं अगर सम्भव हो तो गरीब बच्चों को पेंसिल, कटर, रबर, इत्यादि देकर भगवान न सही मगर भगवान के दोस्त अवश्य बन जाओ । भगवान ने आपको इस धरती पर शिक्षक बनाकर भेजा है । बच्चों के जीवन में खुशियों का रंग भरकर भगवान को उपकृत करें । जीवन की यही सार्थकता है ।

अध्यापकीय वृति सभी वृतियों की जननी है । आदमी डॉक्टर हो या इंजिनियर, वकील हो अथवा जज, क्लर्क हो अथवा जिलाधिकारी, व्यापारी हो अथवा वैज्ञानिक सबको बचपन में शिक्षक हीं अँगुली पकड़कर लिखना सिखाता है, उसके मानस पटल पर तरह-तरह के भाव अंकित करता है । वह शिक्षकों के बल पर ही आगे चल कर ऊँचे पदों को सशोभित करता है । अतः हे शिक्षकों । शिक्षण कार्य एक उत्कृष्ट सेवा है । इससे बढ़कर कोई सेवा नहीं । राष्ट्र निर्माण में शिक्षक की अहम् भूमिका है अतः अतः शिक्षक बनकर आप संतुष्ट हों एवं भगवान का शुक्रिया अदा करें । शिक्षक पद की गरिमा को बरक़रार रखें । शिक्षकीय वृति से आनंदित हों और बच्चों में आनंद प्रदान करें । विद्यालय अवश्य जायें एवं सर्वप्रथम अपने मूल कार्य पर ध्यान दें और उसे पूरा करें ।

अतः में मैं डाइट के सभी व्याख्याताओं, प्रशिक्षुओं एवं शुभेच्छुओं को हृदय से धन्यवाद देता हूँ जिनके सहयोग के फलस्वरूप यह पत्रिका

आपके सामने साकार रूप ले सकता है । मैं शिक्षा विभाग के सभी उच्चाधिकारियों का आभार प्रकट करता हूँ जिनका समय-समय पर मार्गदर्शन मिलता रहा है । आपके सुझाव की प्रतीक्षा रहेगी ।